3

प्रारंभिक स्तर पर अनुभवाधारित भाषा अधिगम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

अशोक कुमार*
रमेश कुमार**

"देश का निर्माण इसकी कक्षा-कक्ष में हो रहा है" *कोठारी कमीशन* (1964–66) की इस संकल्पना से यह सुनिश्चित होता है कि शिक्षा का महत्व बच्चों के लिए महत्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। चूँकि बच्चे समाज के निर्माता होते हैं। इस तरह यदि बच्चों की शिक्षा व्यवस्थित और सुचारु रूप से पूर्ण की जाती है, तो निश्चित रूप से बच्चे एक अच्छे व सुव्यवस्थित समाज एवं राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक होंगे। इस प्रकार चाहे अच्छे समाज के निर्माण की बात हो या बच्चों के सार्वभौमिक विकास की बात हो वहाँ पर शिक्षा और शिक्षण के महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। शिक्षा और शिक्षण प्रकिया में बच्चों की भावनाओं, विचारों और उनकी अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया में 'भाषा' की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। भाषा बच्चों के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण साधन है, जिससे बच्चों के सृजनात्मक, आलोचनात्मक, अपसारी व अभिसारी चिंतन का विकास किया जाता है। यहाँ तक की *कोठारी कमीशन* (1964–66) ने भी *त्रिभाषा सूत्र* की सिफारिश की थी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भाषा के अनुभव आधारित अधिगम संवर्धन को महत्वपूर्ण माना है। प्रभावशील अधिगम संवर्धन में अनुभव का विशिष्ट महत्व होता है। आरंभ से ही करके सीखने पर अधिक ज़ोर डाला गया है और इसी के माध्यम से भाषा-शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व और क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया में अनुभवात्मक गतिविधियाँ अधिगम संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और अनुभव आधारित अधिगम बच्चों को सैद्धांतिक विषयवस्तु की गहरी समझ विकसित करने, भाषायी कौशलों के विकास करने के साथ-साथ वास्तविक दुनिया के प्रत्यक्ष अनुभव के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

प्रस्तुत लेख के द्वारा हिंदी की पद्य शिक्षण विद्या को अनुभव आधारित विधि से शिक्षण कराने पर चर्चा की गई है तथा अनुभव आधारित अधिगम के प्रसिद्ध निर्माता कॉल्ब महोदय के अधिगम सिद्धांत के अनुरूप में अनुभव आधारित काव्य शिक्षण को प्रस्तुत किया है। कॉल्ब के अधिगम सिद्धांत के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों के स्वरूप व रूपरेखा के बारे में भी चर्चा की गई है। लेख हिंदी भाषा के प्रीप्रेटरी स्तर के शिक्षकों तथा अन्य हितधारकों के लिए पद्य विद्या को शिक्षण में काफ़ी सहायक सिद्ध होगा।

**सहायक प्राध्यापक*, शैक्षिक मनोवैज्ञानिक और शिक्षा आधार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016
***सह-आचार्य*, प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

भाषा एक विषय के रूप में ही नहीं, बल्कि सभी विषयों को पढ़ने, समझने व चिंतन का आधार है। भाषा मात्र ध्वनि ही नहीं है, बल्कि एक सार्थक ध्वनि है। जिस ध्वनि से किसी वस्तु, व्यक्ति, कार्य, घटना, प्रक्रिया आदि का बोध होता हो वे सभी भाषा के अंतर्गत आएँगे, जैसे— 'पेड़' बोलने से पेड़ की आकृति का बोध होता है, 'राम' बोलने से किसी व्यक्ति विशेष का बोध होता है। इसलिए ये सभी ध्वनियाँ भाषा के दायरे में आएँगी। इस तरह जिन ध्वनियों से कोई सार्थक अर्थ नहीं निकलता है, उनकी गिनती भाषा के रूप में नहीं होती है।

भाषा के मुख्य कार्यों को निम्न रूप से देखा जा सकता है—

अभिव्यक्ति— भाषा मनुष्य के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। बाह्य जगत के साथ अंतःक्रिया करने पर मनुष्य के मन में संवेग, भाव एवं विचार अपने आप स्फुरित और व्यक्त होते रहते हैं। नवजात शिशु अपने मस्तिष्क में ध्वनि इकाइयों को ग्रहण करता रहता है। जिनके सहारे वह नई शब्दावली सीखता और जोड़ता है। शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि के साथ-साथ इन इकाइयों में भी निरंतर वृद्धि होती है और बच्चों को अपने संवेगों, भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की शक्ति प्राप्त होती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंत:क्रिया— भाषा हमारी संस्कृति का अंग है। निःसंदेह भाषा और संस्कृति, प्रगाढ़ संबंध होता है। भाषा को एक सांस्कृतिक तत्व कहा जाता है, परंतु भाषा संस्कृति का तत्व मात्र ही नहीं, बल्कि समस्त सांस्कृतिक क्रियाकलापों का आधार है और इस कारण किसी भी समाज की भाषा का अध्ययन आवश्यक है। लियोनार्ड ब्लूम फील्ड के शब्दों में, "भाषा की क्रिया ही प्रत्येक समुदाय के निर्माण का आधार है।" इस तरह किसी भी मानव समुदाय को भलीभाँति परखने के लिए हमें उसकी भाषा को समझना चाहिए।

सृजनात्मकता— प्रत्येक व्यक्ति में सृजनात्मकता के तत्व निहित होते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मकता के साथ उच्च कोटि की बौद्धिक क्षमता आवश्यक नहीं है। अतः कोई सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी सृजनात्मक हो सकता है।

इस तरह देखा जा सकता है कि भाषा बच्चों को सुखपूर्वक जीने के लिए साधन का कार्य सफलतापूर्वक करने में सक्षम होती है, इसलिए भाषा मनुष्य को साध्य तक पहुँचाने में साधन का कार्य करती है।

प्रारंभिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (पृष्ठ 8) के अनुसार विद्यालयी संरचना में विद्यालयी शिक्षा को चार भागों में विभाजित कर दिया गया जिसमें पहला बुनियादी स्तर (3 वर्ष) आँगनबाड़ी और (2 वर्ष) जिसमें बच्चे कक्षा 1 और कक्षा 2 की पढ़ाई को पूरा कर लेंगे। दूसरे स्तर को, प्रारंभिक स्तर जिसमें बच्चे 3–5 कक्षा तक की पढ़ाई पूरी कर लेंगे। तीसरे स्तर को माध्य स्तर (जिसमें बच्चे कक्षा 6–8 तक की पढ़ाई पूरी कर लेंगे) चौथे स्तर को माध्यमिक स्तर जिसमें कक्षा 9–12 तक की पढ़ाई पूरी कर लेंगे।

प्रस्तुत लेख, केवल प्रारंभिक स्तर की कक्षाओं पर ही केंद्रित है जिसमें कक्षा 3–5 तक के सभी शिक्षकों को ध्यान में रखा गया है। बच्चों के सर्वांगीण

विकास में भाषा महत्वपूर्ण होती है, इसलिए इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों, जैसे— आत्माभिव्यक्ति करने के योग्य बनाना, शुद्ध शब्दों के उच्चारण और विभिन्न शैलियों का ज्ञान कराना, विभिन्न ध्वनियों एवं समानार्थी शब्दों में अंतर, ध्वनि एवं ध्वनि समूहों का ज्ञान कराना, अवलोकन, चिंतन-मनन और विचारों के आदान-प्रदान की प्रवृत्ति जाग्रत करना और लिपि का ज्ञान, शुद्ध उच्चारण और समझपूर्वक पढ़ने में योग्य बनाना। इस स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बच्चों को उपरोक्त सभी उद्देश्यों से अवगत कराना महत्वपूर्ण हो जाता है। चूँकि लेख में अनुभवात्मक विधि से पद्य शिक्षण पर विशेष चर्चा की गई है। पद्य शिक्षण में सौंदर्य, भावों और संवेगों पर चर्चा की जाती है। अतः जब सौंदर्य की अनुभूति भावपूर्ण शब्दों के साथ भाषा के माध्यम से प्रकट की जाती है तो यह काव्य कहलाता है। इसी बात को संस्कृत में "*वाक्यं रसात्मकं काव्ययम*" कविता में सरलता के साथ ओज और माधुर्य से परिपूर्ण गुण तथा हृदय की संपादित करने की शक्ति होती है।

पद्य शिक्षण अर्थ

मनुष्य हमेशा से सौंदर्य के प्रति आकर्षित रहा है। वह समाज में रहकर अपनी अनुभूति विभिन्न ढंग से प्रस्तुत करता है। वही अनुभूति जब भावपूर्ण शब्दों के माध्यम से प्रकट करता है तो वह काव्य या पद्य कहलाता है।

पद्य शिक्षण का महत्व

प्रारंभिक स्तर के शिक्षण में पद्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पद्य शिक्षण में बच्चों के भाव पक्ष (संवेदना), कल्पना, बुद्धि, कला पक्ष (शिल्प) आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। कविताओं में प्रयुक्त बिंब और प्रतीक एक तरफ़ कवि की सौंदर्यानुभूति परक कल्पना की कलात्मक अभिव्यक्ति होती है, दूसरी तरफ़ कविता शिक्षण के क्रम में उन सौंदर्यानुभूति परक कल्पनाओं को कक्षा में साकार करती है, जिससे कविता में वर्णित सौंदर्य की आनंदमयी अनुभूति होती है। इस प्रकार पद्य शिक्षण के द्वारा बच्चों में उपरोक्त सभी प्रकार की विशेषताओं को विकसित किया जा सकता है।

पद्य शिक्षण की विधियाँ

इस प्रकार सौंदर्य और भावों को प्रकट करने के लिए पद्य शिक्षण की अधिगम प्रक्रिया महत्वपूर्ण हो जाती है। अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिए शिक्षक की भूमिका मुख्य होती है, जो विभिन्न निम्न प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करके पद्य शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने में सहायक होते हैं—

अभिनय विधि— पद्य शिक्षण की यह सर्वश्रेष्ठ विधि है, क्योंकि इसमें शिक्षक अभिनय व गीत की सहायता से पद्य का शिक्षण कराते हैं जिससे कक्षा में एक सरल वातावरण बनता है। इसी प्रकार बाल गीतों के साथ अभिनय करते हुए कविता का शिक्षण कराया जाता है। यह विधि रसानुभूति होती है। अतः यह बाल केंद्रित तथा मनोवैज्ञानिक विधि है। इस विधि से बच्चे स्थाई रूप से ज्ञान की प्राप्ति कर पाते हैं।

गीत विधि— गीत विधि कविता शिक्षण की सबसे उत्तम विधि मानी जाती है, क्योंकि इस विधि के अंतर्गत कविता में आने वाले उतार-चढ़ाव का ध्यान

रखते हुए लय, सुर व ताल के साथ कविता का सस्वर वाचन होता है। इस विधि में अध्यापक एक पंक्ति गाता है, तत्पश्चात विद्यार्थी उसका अनुकरण करते हैं, जैसे— "मछली जल की रानी है" और अन्य कोई ऐसी कविता हो सकती है।

अर्थ बोध विधि— यह गीत विधि से एक स्तर आगे है। इस विधि में शिक्षक एक पंक्ति को स्वयं गाता है तथा बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। बाद में वह उस पंक्ति का अर्थ बच्चों को समझाता है। इस विधि में गीत का प्रवाह बीच-बीच में रुक जाता है जिससे बच्चे विषय को स्थाई रूप से समझ पाते हैं।

रोल-प्ले— प्रारंभिक स्तर पर भाषा की अभिव्यक्ति रोल-प्ले विधि से ज्यादा सरल और रोचकपूर्ण तरीके से होती है। भाषा के साथ-साथ बच्चों में कई प्रकार के कौशलों का भी विकास होता है तो शिक्षकों द्वारा कक्षा में इस विधि का प्रयोग करके भाषा का विकास अधिक सरल व रोचकपूर्ण तरीके से करवाना चाहिए।

अतः उपरोक्त विधियों के अलावा और भी अन्य विधियों का प्रयोग करके पद्य शिक्षण को रोचकपूर्ण बनाया जा सकता है, जिसमें व्याख्यान विधि, खंडान्वय विधि, व्यास विधि, तुलना विधि और समीक्षा इत्यादि विधियों का भी प्रयोग किया जा सकता है, जिससे भाषा अधिगम और सरल हो सके।

इस प्रकार प्रारंभिक स्तर पर भाषा का सामान्य शिक्षण-अधिगम तो परंपरागत विधियों से कराया ही जाता है। यदि इस स्तर पर बच्चों को उनके ज़्यादा से ज़्यादा अनुभवों द्वारा पढ़ाया जाए तो बच्चों की भाषा सीखने के प्रति अधिक रुचि होगी जो प्रत्यक्ष रूप से बच्चों द्वारा प्रयोग करी जा रही दिन-प्रतिदिन की भाषा से प्रतिविंबित होगी। इस तरह अनुभव आधारित भाषा अधिगम की भूमिका भाषा को पढ़ाने में काफ़ी रोचकपूर्ण हो जाती है।

आनुभाविक अधिगम की संकल्पना

अनुभव द्वारा सीखना एक आनंदपूर्ण और रोचकपूर्ण संकल्पना है। सही अर्थों में देखा जाए तो बच्चों में स्थाई रूप से सीखना केवल और केवल उनके अनुभवों पर ही आधारित होता है, जितना ज़्यादा व्यापक अनुभव, उतना व्यापक रूप से सीखना होता है, इसलिए अनुभव आधारित अधिगम महत्वपूर्ण है। यह अधिगम पूर्णरूप से एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जिसमें बच्चे सीखने के संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक तीनों पक्षों के द्वारा समग्र रूप से सीखते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षण के सभी चरणों में प्रायोगिक शिक्षा को अपनाया जाएगा जिसमें व्यावहारिक शिक्षा, कला-एकीकृत शिक्षा, कहानी आधारित शिक्षाशास्त्र, प्रत्येक विषय के भीतर मानक शिक्षाशास्त्र के रूप में और विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज शामिल है । इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अनुभव आधारित शिक्षण का सिर्फ़ समर्थन ही नहीं किया है, बल्कि इसे भाषा शिक्षण में भी लागू करने पर जोर दिया है। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ये भी कहा है कि सभी भाषाओं के शिक्षण को नवीन व अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्ध किया जाएगा। इस तरह भाषा का अधिगम आनुभाविक विधि से सरल, रोचक, आनंदपूर्ण, किसी भी प्रकार

के दबाव से मुक्त अर्थात स्वतंत्र रूप से सीखने व अभिव्यक्त करने में सहायक सिद्ध होता है। कार्ल रॉजर्स (1969) ने भी अनुभवजन्य अधिगम के सिद्धांत पर जोर डाला जिसके अनुसार अनुभव करके सीखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बच्चों पर पुस्तकों का बोझ न लादकर उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करना अधिक सार्थक है और यहाँ तक की महोदय कॉल्ब (1984) ने कहा कि "आनुभाविक अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में किया जाता है जहाँ ज्ञान का निर्माण अनुभव के परिवर्तन द्वारा होता है।"

आनुभाविक अधिगम की विशेषताएँ

आनुभाविक अधिगम की विशेषताओं को निम्न रूप में देखा जा सकता है—

- **स्थाई एवं दीर्घकालीन अधिगम**— अनुभव आधारित अधिगम को महत्वपूर्ण इसलिए माना जाता है, क्योंकि सीखने वाला पूर्ण रूप से संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक तीनों पक्षों से जुड़ा होता है तो बच्चों का सीखना स्थाई हो जाता है और साथ ही साथ सीखना काफी आनंदपूर्ण भी होता है। किसी भी प्रकार का सीखना तभी आनंदपूर्ण होगा जब सीखने वाला अधिगम प्रक्रिया में समग्र रूप से जुड़ा हो।
- **वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जुड़ाव**— इस प्रकार के सीखने में शिक्षक कक्षा में विषय को बच्चों के वास्तविक जीवन के क्रियाकलापों के साथ जोड़ता है तो बच्चे सीखने की प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। इस तरह सीखने से जीवन को वास्तविक क्रियाकलापों से जोड़ने से शिक्षण काफ़ी रोचक और उत्साहपूर्ण हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाए जाने पर जोर देती है।
- **मूर्त से अमूर्त तक जोड़ना**— अनुभव द्वारा सीखने की प्रक्रिया मूर्त से अमूर्त की तरफ़ चलती है जिसमें शिक्षक कक्षा में प्रारंभिक स्तर के बच्चों के सामने कुछ मूर्त, घटनाओं, परिस्थितियों, वस्तुओं और अनुभवों को साझा करता है तो बच्चे विषय को सामान्यीकरण से विशेष की तरफ़ ले जाने में सफल होते हैं जो स्थाई रूप से सीखने का एक प्रतिबिंब होता है।
- **विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता**— अनुभव आधारित अधिगम की प्रक्रिया में निःसंदेह बच्चों की या सीखने वालों की भागीदारी सक्रिय होती है तो शिक्षण रोचकपूर्ण हो जाता है। निःसंदेह अनुभव द्वारा सीखना स्थाई होता है। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि सभी चरणों में, प्रायोगिक आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा, जिसमें अन्य चीज़ों के अलावा स्वयं करके सीखना और प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया जाएगा।
- **पूर्वज्ञान और अनुभवों की नींव पर नवीन ज्ञान का निर्माण**— अनुभव आधारित अधिगम सीखने का एक सुंदर और व्यवस्थित तरीका है जो बच्चों के मूर्त अनुभवों और जीवन की सभी साधारण अनुभवों के साथ मिलकर नवीन ज्ञान का निर्माण करने में सहायक होता है। इस प्रकार बच्चों में विभिन्न प्रकार के अवलोकनों से स्थाई ज्ञान का निर्माण किया जा सकता है। इस प्रकार

सीखना महत्पूर्ण होता है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का कार्य करता है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, भाषा शिक्षा कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए तथा भाषा सीखने का अर्थ है— नई शब्दावली सीखना, भाषा की दोनों विधाओं की अवधारणाओं को समझना और उनके बारे में आलोचनात्मक रूप से चर्चा करने एवं लिखने में सक्षम होना। यहाँ तक की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (4.7, पृष्ठ 18) में कहा गया है कि अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिए जाने के अंतर्गत कला-समन्वित शिक्षण को कक्षा प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाए जिससे न सिर्फ़ कक्षा ज़्यादा आनंदपूर्ण बनेगी, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के शिक्षण में समावेश से भारतीयता से भी बच्चों का परिचय हो पाएगा। यह नीति (2020) सभी भाषाओं के एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाने पर ज़ोर देती है, जिसमें संवादात्मक, बातचीत, अभिव्यक्ति तथा वाचन कौशल का विकास हो सकें।

- **प्रारंभिक स्तर पर भाषा सीखना**— अनुभवों द्वारा किसी भी प्रकार का सीखना काफ़ी रोचक व स्थाई हो जाता है इसलिए बच्चे सबसे पहले धीरे-धीरे भाषा को कई प्रकार से समझने व बोलने का प्रयास करते हैं। इस पक्ष में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि 2–8 वर्ष की आयु में बहुभाषिकता से बच्चों का बहुत अधिक संज्ञानात्मक लाभ होता है, इस तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुभाषावाद को बढ़ावा देती है, इस सिद्धांत के अनुरूप शिक्षण और सीखने की भाषा शक्ति पर प्रकाश डालती है।
- **प्रारंभिक स्तर पर पारिवारिक अनुभवों से भाषा सीखना**— निःसंदेह बच्चे पहले परिवार और बाद में विद्यालय के साथ अधिकतर समय व्यतीत करते हैं। इस तरह बच्चे परिवार के तौर-तरीकों, परिवार की संस्कृति व परिवार वाले लोगों की भाषा से 2–8 वर्ष की उम्र में बहुत कुछ अनुभव करके सीख लेते हैं। इसलिए घर की भाषा का प्रभाव बच्चों के सीखने में काफ़ी प्रभावशील दिखाई देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा या मात्रभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेज़ी से समझते एवं सीखते है। अतः कम से कम कक्षा 5 तक शिक्षा का माध्यम घर की भाषा या मात्रभाषा या स्थानीय भाषा होगी। साथ ही यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों द्वारा बोले जाने वाली भाषा शिक्षक और बच्चों के बीच बाधा न बनें/शिक्षक को सभी बच्चों की भाषाओं का स्वागत करना चाहिए और धीरे-धीरे उन्हें स्कूली भाषा की ओर ले जाना चाहिए।
- **कल्पनाशक्ति का विकास**— आनुभाविक अधिगम पद्धति द्वारा भाषा सीखने से बच्चे अमूर्त चिंतन कर पाते हैं, जिससे उनमें कल्पनाशक्ति का विकास होता है। उदाहरण के लिए, मिर्च का मज़ा (*रिमझिम*, कक्षा 3, रा.शै.अ.प्र.प.) कविता के अनुभाविक अधिगम पद्धति द्वारा कराते हैं तो बच्चे काबुली वाले के अनुभव को महसूस

कर पाते हैं। इस तरह कल्पना द्वारा नई बातों का सृजन करते हैं।

अनुभव जन्य अधिगम की सीमाएँ

जैसे सिक्के के दो पहलू होते हैं जिनमें से एक धनात्मक और दूसरा ऋणात्मक, उसी प्रकार प्रस्तुत संदर्भित लेख भी एक अपवाद नहीं है जिसमें अनुभवजन्य अधिगम की कुछ विशेषताओं के साथ सीमाएँ हैं जो निम्नलिखित हैं—

- **अधिक समय लेने वाला**— निःसंदेह अनुभव से सीखना महत्वपूर्ण होता है, चूँकि बच्चे समग्र रूप से जुड़कर सीखते हैं, लेकिन सच्चाई ये है कि विषय की हर अवधारणा या संकल्पना को अनुभव जन्य विधि से नहीं पढ़ा सकते हैं। कई संकल्पनाएँ काफ़ी समय ले लेती हैं, जो अन्य विषयों को भी प्रभावित करती हैं। इसलिए अनुभवजन्य अधिगम अधिक समय लेने वाली विधि होती है, जो समय पर पाठ्यक्रम को पूरा करने में बाधा उत्पन्न करती है।
- **प्रत्यक्ष भौतिक वातावरण प्रदान करना कठिन**— कभी-कभी अध्यापक विषय की संकल्पना हिंदी पद्य के संदर्भ में बच्चों की कल्पनाओं और सौंदर्य को प्रत्यक्ष रूप देने में असफल हो जाते हैं, जो इस सिद्धांत की एक सीमा है।
- **कल्पनाशीलता के विकास में बाधक**— कभी-कभी बच्चें अपने अनुभवों और कल्पना के आधार पर अपनी कल्पनाशक्ति को सही दिशा देने में असमर्थ होते हैं, इसलिए बच्चों के प्राथमिक स्तर पर अनुभवजन्य अधिगम बच्चों की कल्पनाशक्ति में रूकावट का भी कभी-कभी कारण बन जाती है।

यूँ तो अनुभाविक अधिगम एक परंपरागत शिक्षण विधि है जिसमें अनेक शिक्षाविदों व मनौवैज्ञानिकों ने अपने-अपने अनुभवों के आधार पर कई अधिगम प्रतिमानों का निर्माण किया जिनमें जॉन डी.वी. का अधिगम प्रतिमान, लेविन का क्रियात्मक शोध प्रतिमान, पियाजे का संज्ञानात्मक विकास इत्यादि शामिल है। इस तरह अनुभाविक अधिगम के अनेकोनेक प्रतिमान निर्माण हुए, लेकिन इन सभी का सार प्रत्यक्ष रूप से कॉल्ब के अनुभाविक अधिगम में प्रतिबिंबित होता है। इसलिए इस लेख में केवल कॉल्ब के प्रतिमान को संदर्भित किया था। इस प्रकार कॉल्ब ने अधिगम की प्रक्रिया में अनुभवों को ही केंद्र में रखा तथा कॉल्ब ने अपने अधिगम चक्र को चार भागों में विभाजित किया है, इसलिए कॉल्ब का अधिगम चक्र या प्रतिमान को काफ़ी महत्वपूर्ण माना गया, जिसके चार चरण निम्नलिखित है—

आनुभाविक अधिगम (कॉल्ब प्रतिमान पर आधारित)

प्रस्तुत लेख भाषा के आनुभाविक अधिगम के कॉल्ब प्रतिमान पर आधारित है। यह प्रस्तावित प्रतिमान अधिगम के कॉल्ब मॉडल (1983) के अधिगम चक्र पर आधारित है। कॉल्ब ने अधिगम चक्र दिया है और इस चक्र में महत्वपूर्ण चार अवस्थाएँ है जिनको आसानी से समझा जा सकता है।

- मूर्त अनुभव— बच्चों को विषय का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है।

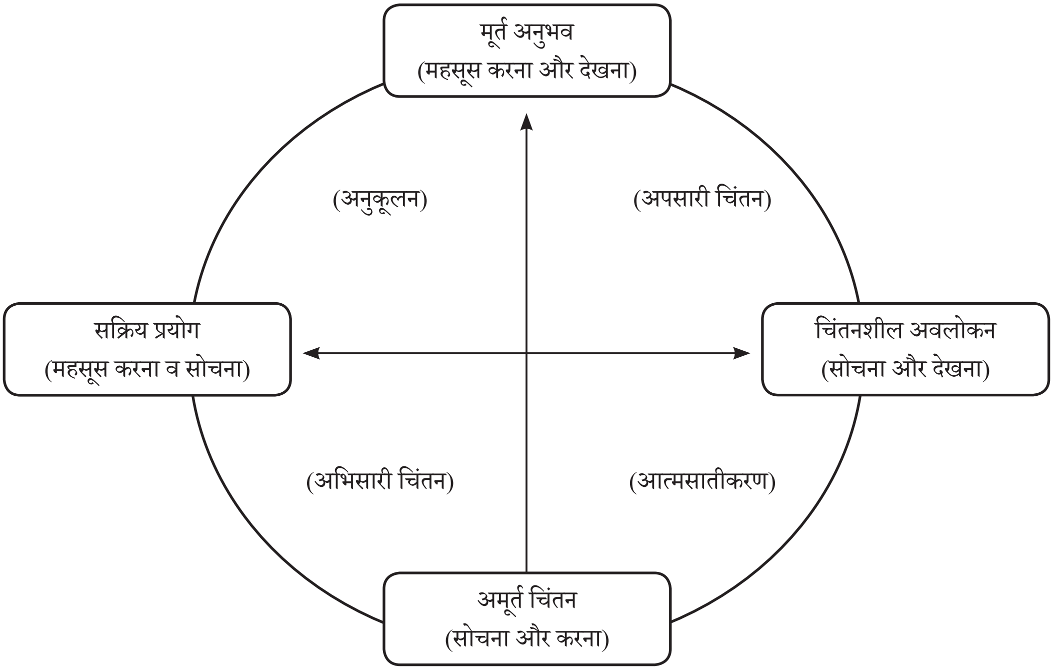

कॉल्ब अनुभवात्मक अधिगम प्रतिमान 1983

- चिंतनशील अवलोकन— बच्चे अपने अनुभव से विषय पर चिंतन करते हैं।
- अमूर्त चिंतन— बच्चे अवधारणा बनाते हैं और अनुभव से सामान्यीकरण करते हैं।
- सक्रिय प्रयोग— बच्चे सीखी गई अवधारणाओं और सिद्धांतों को नई स्थितियों में लागू करते हैं।

उदाहरण के रूप में एक अध्यापक बच्चों के किसी स्थानीय व्यवसाय के लिए एक क्षेत्र यात्रा में भाग लेने के लिए कह सकता है, उस यात्रा के दौरान बच्चों के संचालन का निरीक्षण करने और कर्मचारियों से प्रश्न पूछने का अवसर प्राप्त होगा। उस यात्रा के बाद बच्चे विचार करेंगे कि यात्रा में क्या देखा? कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं से कैसे संबंधित है? इसके बाद एकत्रित जानकारियों का वर्णन करेंगे और अपनी नई अवधारणा का निर्माण कर सकेंगे। अंत में जो सीखा है उसे एक नई स्थिति में लागू करेंगे। जो अनुभव जन्य अधिगम का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है। हिंदी भाषा पद्य के शिक्षण को कॉल्ब प्रतिमान (चक्र) के चारों चरणों के द्वारा समझा जा सकता है जो निम्न रूप में विस्तारित है—

प्रथम चरण या सोपान

मूर्त अनुभव (महसूस करना)

मूर्त चिंतन का अर्थ है कि बच्चे वस्तुओं, चित्रों और अन्य दृश्य सामग्री इत्यादि को देखते हैं और महसूस

करते हैं। इस प्रकार शिक्षक बच्चों के अपसारी चिंतन को विकसित करने में सफल होते हैं। इस चरण पर शिक्षक विषय की प्रकृति और छात्रों की रुचि के अनुसार मूर्त वस्तुओं द्वारा अनुभव कराने का प्रयास करता है। अपसारी चिंतन में बालक जब भौतिक वस्तुओं को देखता है और महसूस करता है तो किसी दृश्य के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने का कौशल विकसित करता है, जिसे अपसारी चिंतन कहते हैं। इस चरण में बच्चों में निम्न कौशलों का विकास होता है, जैसे— नवाचार का विकास, कल्पनाशक्ति का विकास, सृजनात्मकता का विकास इत्यादि कौशलों का विकास करना मुख्य उद्देश्य होता है।

द्वितीय चरण या सोपान

चिंतनशील अवलोकन (संरचना (अमूर्त सोच) देखना)

कॉल्ब के इस द्वितीय चरण में बच्चे भाषा सीखते समय मूर्त अनुभव को आत्मसात करते हैं और सभी सूचनाओं को एकत्रित कर पाते हैं। अमूर्त अवधारणा और विचारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और विभिन्न प्रकार के अन्वेषण भी कर पाते हैं, जैसे—

- पद्य भाषा के संदर्भ में बच्चे विभिन्न कौशलों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- पद्य के सौंदर्य के बारे में चिंतनशीलता का विकास होगा।
- उचित स्वर, लय, ताल तथा आरोह-अवरोह के साथ पद्य वाचन का विकास होगा।
- सृजनात्मकता तथा कल्पनाशक्ति का विकास होगा।
- समस्या समाधान योग्यता का विकास होगा।

इस प्रकार शिक्षक पद्य का शिक्षण कराते समय कॉल्ब प्रतिमान बच्चों में उपरोक्त कौशलों का विकास करने में सक्षम हो पाता है और पद्य शिक्षण-अधिगम को स्थाई बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

तृतीय चरण या सोपान

कॉल्ब प्रतिमान का यह तीसरा चरण है जिसे अमूर्त चिंतन (सोचना और करना) कहते हैं।

इस चरण में बच्चे पहले चरण के ठोस अनुभवों के साथ अर्थात अपसारी चिंतन को करते हुए द्वितीय चरण में आत्मसात कर लेते हैं। आत्मसात करते हुए बच्चों का अभिसारी चिंतन विकसित हो जाता है। जिसमें बच्चे पद्य के संप्रत्य को ध्यान में रखकर बहुत सारी चीज़ों जैसे शब्दों और भावों आदि को समझ पाते हैं। वह जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान करने के लिए अपने ज्ञान का उपयोग कर पाते है।

चतुर्थ चरण या सोपान

सक्रिय प्रयोग (महसूस करना और सोचना)

कॉल्ब प्रतिमान का चौथा व अंतिम चरण चक्र के सभी चरणों का एक अंतिम रूप है और तीनों चरणों को जोड़ते हुए अब बच्चों में सीखने की शैली (अपसारी चिंतन, आत्मसात्कार, अभिसारी चिंतन और अनुकूलन) और कौशल भी विकसित हो जाते हैं। जिसमें मूर्त अनुभव, चिंतन अवलोकन, अमूर्त सोच के आधार पर बच्चों के संज्ञान में जो संप्रत्यय का निर्माण हुआ हैं, वह उन्हें अपने दैनिक जीवन में (व्यवहार) जोड़-तोड़ करके प्रयोग कर सकते हैं अर्थात इस चरण में विद्यार्थी प्रयास और त्रुटि दृष्टिकोण का

उपयोग करतें हैं, साथ ही उसमें अंतर्दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। नवीन चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित हो जाती है। बच्चों में पद्य के विलय में पर्याप्त क्षमता या निपुणता या योग्यता का विकास हो जाता है। अतः इस चरण में बच्चों में निम्न प्रकार के कौशलों का विकास हो पाएगा—

- बच्चे तुकांत शब्दों को लिखने में सक्षम हो पाएँगे।
- बच्चे उच्चारण करने में सक्षम हो जाएँगे।
- बच्चे वाक्यों को प्रयोग करने में भी सक्षम हो पाएँगे।
- कविता के भावों को अपने शब्दों में कहने में सक्षम हो जाएँगे।

इस तरह यह बहुत ही आसानी से देखा और समझा जा सकता है कि अनुभव आधारित अधिगम में कॉल्ब प्रतिमान के सीखने के चारों चरण (चक्र) बच्चों के प्राथमिक स्तर पर भाषा (पद्य) पक्ष को स्थाई रूप से समझ पाते हैं। बच्चों का इस प्रकार का सीखना रुचिकर, उत्साहित और आनंदपूर्ण होता है। बच्चे सही अर्थों में भाव के पद्य पक्ष को समझने व अपने वास्तविक जीवन में भाषा के सभी पक्षों को जोड़ते हुए भाषा अधिगम को और रोचकपूर्ण बनाने में सक्षम हो पाते हैं।

शिक्षकों को सुझाव

- शिक्षकों को चाहिए कि भाषा शिक्षण-अधिगम को आनुभाविक अधिगम विधि से कराना चाहिए, जिससे बच्चों का रुझान भाषा के सीखने के प्रति बढ़ेगा।
- प्रारंभिक स्तर पर बच्चों को भाषा पढ़ाते समय बच्चों के स्थानीय अनुभवों को सम्मिलित करके पढ़ाना चाहिए, जो सक्रिय रूप से कक्षा में सहभागिता के लिए प्रेरित करेगा।
- अनुभव आधारित अधिगम में प्रयुक्त कॉल्ब प्रतिमान के सभी चरणों को ध्यान में रखकर शिक्षण कराया जाता है, तो निःसंदेह शिक्षण काफ़ी रोचक और भाषा की संकल्पना में गहन स्पष्टता होगी।
- कॉल्ब प्रतिमान के अधिगम चक्र का प्रयोग करके यदि शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर पद्य शिक्षण कराते हैं, तो कॉल्ब प्रतिमान के अधिगम चक्र के सभी स्तरों को विषय के साथ जोड़कर शिक्षण कराने से विषय रोचकपूर्ण व स्थाई अधिगम होगा।
- अनुभवात्मक विधि भाषा की अवधारणात्मक समझ पर ज़ोर डालती है, इसलिए शिक्षकों को सक्रिय होकर कक्षा में इसका प्रयोग करना चाहिए।
- इस विधि से बच्चों की रचनात्मक, तार्किक सोच, तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए उनके अनुभवों का प्रयोग करना चाहिए।
- शिक्षकों को चाहिए 'जीवन कौशल' जैसे— आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन आदि को भाषा के साथ जोड़कर बच्चों के जीवन को कुशल बनाना।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, भाषा जीवन के लिए महत्वपूर्ण विषय है। बिना भाषा के व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और संवदेनाओं को प्रकट किए बिना खुश नहीं रह सकता है। अतः खुश रहने के लिए

भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य होता है और प्रभावशील भाषा का ज्ञान, औपचारिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर निर्भर करता है। इस तरह शिक्षण-अधिगम को रोचकपूर्ण बनाना अनिवार्य होता है। शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए बच्चों की सक्रिय सहभागिता का होना आवश्यक हो जाता है। अगर बच्चों की सहभागिता स्थानीय अनुभवों को ध्यान में रखकर, शिक्षण-अधिगम कराया जाता है तो निश्चित रूप से बच्चे पद्य शिक्षण के प्रति उत्साहित होंगे और पद्य शिक्षण को रोचकपूर्ण ढंग से समझ सकेंगे। जिससे बच्चों में सौंदर्यता के बारे में चिंतनशीलता का विकास होगा, सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति, समस्या-समाधान, सही उच्चारण, वाक्यों में प्रयोग और कविता की भाषा जैसे कौशलों को विकसित कर पाएँगे इसलिए प्रस्तुत लेख में पद्य शिक्षण को अनुभवात्मक विधि से शिक्षण कराने पर केंद्रित है। अतः शिक्षक को चाहिए कि भाषा की दोनों विधाओं कों अनुभवात्मक विधि से पढ़ाएँ जिसमें बच्चों की कक्षा में सहभागिता को बढ़ाया जा सके और भाषा को रोचकपूर्ण विधि से सीखने में सफल हो सके।

संदर्भ

कॉल्ब, डी. 1984. *एक्सपीरियंस लर्निंग : एक्सपीरियंस एज़ द सोर्स ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट एंगलवुड क्लीफ्स.* एन.जे. प्रेंटेस हॉल न्यू जर्सी, अमेरिका.

कुमार, अशोक. 2023. अनुभवाधारित भाषा अधिगम. *'आओ अनुभव से सीखें' हैंडबुक (प्रीप्रेटरी स्टेज के शिक्षकों के लिए).* राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110 024.

कुमार, अशोक और नैन्सी. 2023. दिल्ली के स्कूलों में शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में प्रयोगात्मक शिक्षा के उपयोग के प्रति शिक्षकों की धारणा का विश्लेषण. *शिक्षक, शिक्षा और प्रशिक्षण का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल* (पूर्व-वार्षिक जर्नल). खंड 3, आई.एस.एस.ए. 2694–2267.

भाटिया और जोशी. 2020. *अनुभवात्मक शिक्षा (नई शिक्षा नीति 2020 का एक ऑफ स्कूल).* पैरागोन इंटरनेशनल पब्लिशर्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2022. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

रोजर्स, सी.आर. 1969. फ्रीडम टू लर्न कोलम्बस ओ.एच. मेरिल. https:/egyankosh.in.translate.goog/handle/123456789/46211

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार, नई दिल्ली.